

M. T. R. COLLEGE, SURAT

Manuscripts Library

No. ^{Rel.}
_{Set.} 1224

Title: *Vyasa Puja Vidhi*

1224

Complete

| | | | | |
|------|---|-------------------|---|-------------|
| : | : | Vyāsa Pūjā Vidhi | : | Title |
| : | : | | : | Author |
| : | : | | : | Editor |
| : | : | Samvat 1700 | : | Year, Vols. |
| : | : | Scribe Govardhana | : | Publisher |
| 1224 | : | : | : | Remarks |

[illegible]

संजातश्च ज्ञातानां प्रथमवदितपेव महापद्मविश्वदेवादि कार्ये रहि
तानज्जिकद्विजगद्देविता त्तानां प्रजाज्ञात-सुदुर्जंतु ह्यमाना
नां तच्चोषधसेवना नानिषवर्णस्नानाकरणा लोहादिधातुवित्त
संग्रहस्ततानां दुष्टसंग्रहस्ततानां प्रहोरात्रं उपनिषदादिप्रण
वजाप्यहीतानां नानोपचारकर्मस्ततानां स्त्रिषु पास्वाहु-भोजन
तैलान्यगाद्युद्धर्तनस्ततानां श्रुत्याचारहीनानां गंगादितीर्थस्वा
रहितानां निरंतरनिर्मत्राणि द्वास्ततानां माधुकर्मे न हीनानां मि
थ्यालापऊर्ध्वदहिकादिवाचिकपथे तं गृहस्थानां गृहेति द्वास्त
तानां शुक्लविरधरणा नो, प्रहोरात्रमीश्वरस्मरणा हीनानां मिथ्या
लपस्ततानां मायामोहितयेतसां एवंविधपापारामस्मरणात् तानि
शुद्धाचारपरिपालनाया वा ह्युपायैस्त्रिषु विषयैश्च श्रमपरिपाल
नाया, प्रायश्चित्तोपायैश्च मास्यो वस्त्रैश्च पायनस्य सप्तिवारस्पष्टजनमही
कश्चिद्यो ततः सिद्धे पीडय कल्प्या तदुपरि मद्गतवस्त्रविस्तीर्णतन्मध्ये

१॥

एताश्चाप्येतत्ततो ब्राह्मणाः स्वस्तिवाचनप्रवर्कं। पुरुषस्तत्तत्पुरुषः॥
ते त्रश्रीतैलध्यानी लक्ष्मिकलत्रं प्रति दुर्वक्त्रं पुंसह न मित्रं। कारुण्य
पात्रं कमनीयगात्रं वेदपवित्रं वसुदेवपुत्रीं पुनस्तो जगवते वासुदेवाय॥
शुद्धयज्ञाय दायिने द्विरापगती य पुरुषाय प्रधाम व्यापकाय रूपिणे।
एवं मंत्रं समुवाच। पुष्पांजलि त्रयं दद्यात्। प्रद्युम्ना वाहनी कामरू
पी कल्याणाद्यां कामिनी कामनंदप्रभुं। मन्मथं मधुरानंदं। प्रद्युम्नं ज
एवाम्पदं, प्रनिरुद्धं, प्रनिरुद्धं। महोदरं कामिनि सुंदरजीपी। नमाम्य
हंपद्मनेत्रं। कामारि, तस्मिन् दने। व्यासप्रजा। वेदव्यासप्रयोक्तारं स
त्यसंधिपरायणं। शतं दानं जितक्रोधा संप्रशिष्यं जवावा म्पदं॥ नमो
स्तुते विशालबुद्ध्यो फुल्लारविदेवने शतपत्रनेत्रं येन त्रयात्र तैले
प्रणीतं। ज्वालितं। ज्ञानमयी प्रदीपं। सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञं। परमानंदवी
द्वितीं ब्रह्मर्षीं करवाच्यं। ज्ञानवंतं विवेकिनी परात्परतत्त्वज्ञं॥

नं. ४

यो नोऽप्येवमि विना सर्वेषां विनिर्मुक्तं। सशिष्यं प्राणमाप्स्यते॥ मृ
त्ति काष्ठापनमंत्रः॥ अधिवासस्तद्वन्मेव क्रौडरूपेण द्यौं वृषा। वायास
हसमां पातु केशवो धर्माधिपः॥ इति नियममंत्रः॥ स्थास्यामश्चतुरो
मासान् त्रैवसतिबाधके। उत्तवंतमिति ओं पुः॥ पार्श्वे स्थाहि जसत्तमाः।
निवेसंतु सुरवेनात्रेयास्यामस्ततस्तत्पती॥ इति व्यासपूजा समाप्तौ॥
य॥ श्रीरस्तु॥ स्वस्ति सर्वत्र १०० वर्षे पौखवद्य २२ वौदिने श्रीइलदुर्गे
नागरजातीयजा। हरिपुत्रजो बद्धनकस्य ल्यहिमिदं॥ धर्मैताप्रदुर्गे॥
शुभं नवतु॥ छ॥ श्रीलेखे पाठकयोः॥ छ॥ श्रीपातने ल्यहि। पाण्यां छेधर्मै॥
वदतु वदतु वाक्यं राममिति नित्यं। नवतु नवतु वितं रामपादां।
कुजे शः पततु पततु देहो रामसंन्यतने नः॥ नवतु नवतु ममवां
न्यंत नमज न्मातरे पीः॥

२॥